शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 47 वां वर्ष

ई-पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 47 अंक-23 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2023 सोमवार 30-6 जून 2022 मूल्य पांच रूपए

क्या है केंद्रीय सहायता का सच जयराम के ब्यान से उठा सवाल

- मोदी मण्डी में दो लाख करोड का हिसाब मांग चुके हैं
- अमित शाह ने चंबा में यह आंकड़ा 1,20,000 करोड़ बताया था
- नड्डा 72 करोड़ का आंकडा परोस चुके हैं
- जयराम ठाकुर ने यह राशि 10,000 करोड़ बतायी है
- मोदी अब प्रदेश को कुछ नहीं दे गये हैं

शिमला/शैल। प्रदेश विधानसभा के चुनाव इसी वर्ष के अन्त में होने हैं। जय राम की सरकार अपने चार साल के कार्यकाल में हुए चार नगर निगमों में से दो और उसके बाद तीन विधानसभा और एक लोकसभा का उपचुनाव हार चुकी है। अब नगर निगम शिमला का चुनाव भी उच्च न्यायालय के फैसले के बाद 18 जून तक हो पाना संभव नहीं रह गया है। 18 जून के बाद नगर निगम शिमला पर भी प्रशासक बिठाना अनिवार्य हो जायेगा। नगर निगम शिमला के चुनाव टाले जाने का वातावरण भी उप चुनावों की हार के बाद ही प्रशासन और राजनीतिक गठजोड़ से ही तैयार किया गया। यह अब आम चर्चा का विषय बना हुआ है। नगर निगम शिमला में चुनावी हार होने का डर किस कदर हावी हो चुका है यह अब सामने आ चुका है। इसका असर आने वाले विधानसभा चुनावों पर कितना पड़ेगा यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। विश्लेष्कों की नजर में मोदी की सत्ता में आठ साल पूरे होने पर देश की सारी राज्यों की राजधानियों में आयोजित किये गये गरीब कल्याण सम्मेलन पर प्रधानमंत्री के संबोधन के लिये शिमला का चयन भी इसी लिये किया गया था ताकि इन योजनाओं के सारे लाभार्थियों को मोदी के सामने आम जनता बनाकर पेश किया जा सके। मोदी की इस शिमला यात्रा से हिमाचल और जयराम सरकार को क्या-क्या मिला है अब यह चर्चा का विषय बना हुआ है। चुनावी वर्ष के मध्य में हुये इस आयोजन से भाजपा को क्या मिला यदि इसका आकलन किया जाये तो सबसे बड़ा और पहला सवाल यह आता है कि जिस आयोजन का आमंत्रण देने मुख्यमंत्री स्वयं कांग्रेस अध्यक्षा प्रतिभा वीरभद्र सिंह के आवास पर गये उसी आयोजन से भाजपा के ही पूर्व मुख्यमंत्री शान्ता कुमार और प्रेम कुमार धूमल क्यों गायब रहे? क्या इन्हें आमंत्रित ही नहीं किया गया था या उन्होंने इस आयोजन में शामिल होना पसंद ही नहीं किया। इस सवाल का जवाब अभी तक नहीं आया है। यही नहीं इस आयोजन के मंच पर उपस्थित केंद्रिय मंत्री अनुराग ठाकुर का प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में नाम तक नहीं लिया। चर्चा है कि मंच पर किसे बिठाना है और प्रधानमंत्री अपने संबोधन में प्रदेश के किस-किस नेता का नाम लेंगे इसकी सूची आयोजकों द्वारा तैयार की जाती है। अनुराग का नाम तक प्रधानमंत्री के संबोधन में न आने से किस तरह का राजनीतिक संदेश प्रदेश की जनता में गया होगा इसका अंदाजा लगाना विश्लेष्कों के लिए कठिन नहीं

शेष पृष्ठ 8 पर.....

क्या हिमाचल में आप कांग्रेस और भाजपा का विकल्प बन पायेगी

शिमला/शैल। पंजाब में ऐतिहासिक जीत दर्ज करने के बाद जैसे ही आप ने हिमाचल में चुनाव लड़ने का ऐलान किया है तभी से प्रदेश में प्रशासनिक और राजनीतिक गलियारों में यह सवाल चर्चा का केंद्र बना हुआ है कि क्या आप यहां पर कांग्रेस और भाजपा का विकल्प बन पायेगी। हिमाचल में आज तक कांग्रेस और भाजपा का ही राज रहा है। हर 5 वर्ष बाद सत्ता बदल जाती रही है। इस बदलाव की लहर में शांता कुमार और धूमल तक चुनाव हार चुके हैं। स्व. वीरभद्र सिंह भी रोहडू और जुब्बल कोटखाई दो स्थानों से एक साथ चुनाव लड़ते हुये जुब्बल कोटखाई से हार भी चुके हैं। हिमाचल में कांग्रेस भाजपा का विकल्प खड़ा करने के लिये लोक राज पार्टी से लेकर हिविंका, हिलोपा, हिमाचल क्रांति मोर्चा के गठन के रूप में कई असफल प्रयास हो चुके हैं। मेजर मनकोटिया तो बसपा की सरदारी लेकर भी प्रयास कर चुके हैं। इसी कारण से यह धारणा बन चुकी है कि हिमाचल में सत्ता कांग्रेस और भाजपा के बीच ही रहेगी।

लेकिन 2014 में अन्ना के आंदोलन ने देश की राजनीति में बदलाव का जो वातावरण खड़ा किया है अभी तक देश उसी के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पाया है। जबकि ईवीएम को लेकर बहुत ही गंभीर सवाल भी सामने आ चुके हैं। परंतु इसी बदलाव में देश की राजधानी दिल्ली में भाजपा और कांग्रेस दोनों से आप ने दो बार सत्ता छीन कर जो इतिहास रचा है वह अपने आप में एक अलग ही राजनीतिक प्रयोग है। अब दिल्ली के बाद पंजाब में भी कांग्रेस और भाजपा दोनों से सत्ता छीन कर यह संकेत और संदेश दे दिया है कि भाजपा को आप ही सत्ता से बाहर कर सकती है। जबकि आप का नेतृत्व भी अन्ना आंदोलन से ही निकला है। लेकिन इसमें यह गौरतलब रहा है कि अन्ना का आंदोलन जहां संघ द्वारा प्रायोजित रहा है। वहीं पर संघ की राजनीतिक इकाई भाजपा की इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी प्रत्यक्ष में नहीं रही है। इसलिए जब अन्ना आंदोलन को राजनीतिक आकार देने के लिए राजनीतिक दल बनाने की बात उठी तो अन्ना ने संघ के इशारे पर इसका विरोध कर के आंदोलन को वहीं पर खत्म करने की बात कर दी। क्योंकि मनमोहन सिंह सरकार लोकपाल विधेयक पारित कर चुकी थी। तभी केजरीवाल और उनके साथीयों ने आप का राजनीतिक दल के रूप में गठन कर दिया। यहां यह सबसे महत्वपूर्ण है कि जिस अन्ना आंदोलन के कारण कांग्रेस सत्ता से बाहर हुई

शेष पृष्ठ 8 पर.....

कृषि क्षेत्र में हिमाचल करेगा देश का पथ प्रदर्शनःराज्यपाल

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि हिमाचल प्राकृतिक कृषि राज्य बनने की ओर अग्रसर है। देवभूमि देश के अन्य राज्यों के लिए प्रेरणा की भूमि भी होनी चाहिए और राज्य को देश भर के सभी कृषि विज्ञान केंद्रों के लिए प्राकृतिक खेती के मामले में एक प्रमुख केंद्र की भूमिका निभानी चाहिए।

राज्यपाल डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी सोलन और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय 12वें द्विवार्षिक राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था हमेशा से कृषि पर आधारित रही है, लेकिन दुर्भाग्यवश इस अर्थव्यवस्था की दिशा विदेशी मॉडलों पर विकसित होने लगी है। उन्होंने कहा कि विषय की समझ में भी परिवर्तन आने लगा है, हमारे संस्थान भी पश्चिमी विचारों से प्रभावित हैं। उन्होंने संतोष व्यक्त करते कहा कि पिछले कुछ वर्षों में यह सोच बदलने लगी है, जिससे कृषि क्षेत्र में भी भारी बदलाव आया है।

राज्यपाल ने कहा कि पश्चिमी पद्धति का अनुसरण करने से कृषि योग्य भूमि की उत्पादकता में तेजी से कमी आई है। उन्होंने कहा कि इस समस्या का समाधान हमारी पारंपरिक कृषि में ही है।

उन्होंने कहा कि हम कभी भी

प्रकृति के विरूद्ध नहीं रहे। भारतीय जीवन शैली प्रकृति से जुड़ी है और प्रकृति कृषि से जुड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में इस कृषि पद्धति को अपनाने से अच्छे परिणाम सामने आए हैं और यह पद्धति तेजी से अपनाई जा रही है। उन्होंने कहा कि किसानों ने उनके साथ अपने अनुभव साझा किए हैं। इस पद्धति को अपनाने से लागत में 27 प्रतिशत की कमी आई है और उत्पादन में लगभग 56 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक खेती की इस पद्धति को और अधिक सफल बना सकते हैं। इससे किसानों की आय दोगुनी करने का प्रधानमंत्री का संकल्प भी पूरा होगा।

केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री पुरुषोत्तम रूपाला ने वर्चुअल माध्यम से सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र के तकनीकी विस्तार में कृषि विज्ञान केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने कहा कि नैनो तकनीक को किसानों तक पहुंचाने में यह केन्द्र मददगार साबित हो सकते हैं। इन केंद्रों के माध्यम से नैनो यूरिया को बढ़ावा दिया जा सकता है ताकि इसे विदेशों से आयात करने की आवश्यकता न पड़े। उन्होंने कहा कि हम कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से ड्रोन तकनीक का भी प्रदर्शन कर सकते हैं।

इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि सरकार कृषि को बढ़ावा देने और किसानों की आय दोगुना करने के लिए प्रभावी कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि किसान प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए उत्साहित हैं और खेती को बढ़ावा देने के लिए यह तकनीक खेती छोड़ रहे युवाओं को पुनः आकर्षित करने में मददगार साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों के दृढ़ संकल्प से ही खेती के नित्य प्रयोग भी सफल हो पाएंगे। उन्होंने कहा कि हमें किसानों को रासायनिक खेती से बाहर निकालना है और देश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना है।

आईसीआर के महानिदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि आईसीआर किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में आयात में कमी आई है और उत्पादकता में वृद्धि हुई है। कृषि विज्ञान केंद्र किसानों की आय को दोगुना करने के लिए कार्य कर रहे हैं। तकनीक के बेहतर इस्तेमाल से हम इस लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य की सुरक्षा के लिए टिकाऊ खेती की जानी चाहिए।

डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के कुलपति, डॉ. राजेश्वर सिंह चंदेल ने राज्यपाल का स्वागत किया और प्राकृतिक खेती से संबंधित किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के बारे में विस्तार से बताया।

आईसीएआर के उप-महानिदेशक (सामान्य शिक्षा विस्तार) प्रो.ए.के. सिंह, ने राज्यपाल और अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और आईसीएआर के अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. वी.पी. चाहल ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, आईसीआर के अधिकारी, उपायुक्त सोलन कृतिका कुल्हारी, पुलिस अधीक्षक वीरेन्द्र शर्मा, कृषि विश्वविद्यालयों के विस्तार शिक्षा निदेशक, कृषि विज्ञान केंद्रों के प्रधान वैज्ञानिक और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों को बाल रक्षा किट वितरित की

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने भारत में पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को बहाल करने पर बल देते हुए कहा कि आयुर्वेद की उपयोगिता के कारण इस चिकित्सा पद्धति को विश्व भर में विशेष पहचान मिली है और विश्व का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है।

राज्यपाल ने आरोग्य भारती शिमला द्वारा आयोजित बाल रक्षा किट निःशुल्क वितरण कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए यह बात कहीं। कार्यक्रम का आयोजन हिमाचल शिक्षा समिति और अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली के सहयोग से किया गया।

आर्लेकर ने कहा कि बच्चों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए इस तरह के कार्यक्रम पूरे देशभर में आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद चिकित्सा की एक पारंपरिक पद्धति है, जिसकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि यह कभी खत्म नहीं हुई, क्योंकि यह हमारी संस्कृति से जुड़ी हुई है।

उन्होंने कहा कि यह (आयुर्वेद) हमसे दूर नहीं गया। हम अपने घर के आंगन में लगाये गये औषधीय पौधों का उपयोग करते हुए पले बढ़े और स्वस्थ रहे। हमारे घर के आंगन में तुलसी का पौधा आज भी उगाया जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि हिमाचल में वैद परंपरा बहुत पुरानी है और वे जड़ी-बूटियों के उचित उपयोग में माहिर हैं। उन्होंने कहा कि जीवन शैली का जो रास्ता हमने छोड़ा है, उसे फिर से अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हमने अपनी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति को एक विकल्प के रूप में माना है, जबकि यह उपचार की मुख्य पद्धति है। उन्होंने कहा कि आज देश में इसे आगे बढ़ाया जा रहा है और भविष्य में एकीकृत चिकित्सा पद्धति पर विचार किया जा रहा है, जिसके तहत एलोपैथिक, आयुर्वेद, होम्योपैथी को मिलाकर एकीकृत चिकित्सा की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

राज्यपाल ने आरोग्य भारती के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि यह बच्चों के स्वास्थ्य की दिशा में कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की पुरानी पारम्परिक पद्धति को बढ़ावा देने के लिए संगठन देश में महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है, जो सराहनीय है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर आरोग्य भारती पत्रिका का विमोचन भी किया।

इस अवसर पर राज्यपाल ने बच्चों को बाल सुरक्षा किट भी वितरित की।

इससे पूर्व, आरोग्य भारती के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राकेश पंडित ने कहा कि संस्था स्वस्थ भारत के लक्ष्य की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि स्वस्थ राष्ट्र के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वस्थ रहना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आरोग्य भारती आसपास के वातावरण को स्वस्थ रखकर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने पर कार्य कर रही है और स्वस्थ जीवन शैली के लिये जागरूकता का कार्य भी कर रही है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद में सभी चिकित्सा पद्धतियां शामिल हैं।

अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, दिल्ली के संयुक्त निदेशक डॉ. उमेश वसंत तागड़े ने कहा कि एआईआईए देश का प्रमुख आयुर्वेद संस्थान बनने की ओर अग्रसर है। संस्थान में 25 विशेषज्ञ ओपीडी हैं और उन्होंने कोरोना काल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके संस्थान में उपचार के दौरान किसी की भी मृत्यु नहीं हुई है। उन्होंने एआईआईए में शुरू किए गए विभिन्न विभागों, पाठयक्रमों और अन्य गतिविधियों के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर एआईआईए के डीन प्रो. महेश व्यास व चिकित्सा अधीक्षक डॉ. राज गोपाल ने बाल सुरक्षा किट की उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

शैल समाचार
संपादक मण्डल

संपादक- बलदेव शर्मा

सयुक्त संपादकःजे.पी.भारद्वाज

विधि सलाहकार: ऋचा

अन्य सहयोगी

राजेश ठाकुर

अंजना

मानसून के दौरान आपदा प्रबन्धन तैयारियों की समीक्षा बैठक आयोजित

शिमला/शैल। निदेशक एवं विशेष सचिव राजस्व व आपदा प्रबंधन सुदेश मोक्टा ने आगामी मानसून मौसम में आपदा प्रबंधन से संबंधित विभिन्न तैयारियों की समीक्षा के लिए आयोजित बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में सुदेश मोक्टा ने सभी संबंधित विभागों और एजेंसियों को मानसून के दौरान आपदा प्रबंधन से संबंधित तैयारियां समयबद्ध पूर्ण करने के निर्देश दिए।

उन्होंने सभी अधिकारियों को आपसी समन्वय से कार्य करने के निर्देश देते हुए कहा कि आपदा प्रबंधन के लिए सभी विभागों एवं एजेंसियों के मध्य आपसी समन्वय और सूचनाओं को समय पर सांझा करना सबसे महत्वपूर्ण होता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में जिन स्थानों पर भूस्खलन की संभावना अधिक होती है उन्हें चिन्हित कर आवश्यक तैयारियां पूर्ण की जाएं।

उन्होंने लोक निर्माण विभाग को भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में मशीनें तैनात करने के निर्देश दिए। उन्होंने मौसम विभाग को नाऊ कास्ट, मौसम से संबंधित बुलेटिन, फ्लैश फ्लड मार्गदर्शन व चेतावनी इत्यादि समयबद्ध जारी करने को कहा। उन्होंने जल शक्ति विभाग को निर्बाध व स्वच्छ पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित बनाए रखने के लिए सभी तैयारियां पूर्ण करने को कहा।

उन्होंने सभी जिलों में आपातकालीन संचालन केंद्रों को पूर्णतया कार्यशील करने, सचेत पोर्टल के उपयोग, आवश्यक खाद्य वस्तुओं के भंडारण, मुरम्मत तथा निवारण से संबंधित विभिन्न कार्य भी समयबद्ध पूर्ण करने के लिए निर्देश दिए। बैठक में विभिन्न विभागों तथा एनडीआरएफ के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे, जबकि विभिन्न जिलों के उपायुक्त वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में शामिल हुए।

19 और 20 जून को आयोजित होगा गुरु तेग बहादुर का 400वां प्रकाश उत्सव

शिमला/शैल। सिख धर्म के नौवें गुरु, गुरु तेग बहादुर जी के 400वें प्रकाश उत्सव (जयंती) के उपलक्ष्य में 19 और 20 जून, 2022 को रिज शिमला में राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया जाएगा।

समारोह की तैयारियों की समीक्षा के लिए भाषा, कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव, राकेश कंवर की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की गई, जिसमें नगर निगम शिमला और श्री गुरु सिंह सभा के प्रतिनिधियों भी शामिल हुए।

राकेश कंवर ने बताया कि गुरु सिंह सभा राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर और अन्य गणमान्य व्यक्तियों को समारोह में शामिल होने का निमंत्रण देगी।

उन्होंने जिला प्रशासन को समारोह से सम्बन्धित विभिन्न तैयारियों जैसे पंडाल, लाइट और साउंड सिस्टम आदि की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश दिए। उन्होंने नगर निगम शिमला को शिमला शहर के विभिन्न प्रमुख स्थानों पर स्वागत द्वारा स्थापित करने, शहर की ऐतिहासिक इमारतों की साफ-सफाई, उचित जलापूर्ति, और रोशनी की उचित व्यवस्था करने के भी निर्देश दिए गए हैं। इस अवसर पर उन्होंने परिवहन विभाग को राजधानी शिमला में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए विभिन्न स्थानों पर परिवहन सुविधा सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

इस अवसर पर कानून व्यवस्था, पार्किंग सुविधा, वाहन परमिट सहित अन्य व्यवस्थाओं पर भी चर्चा की गई।

गुरु सिंह सभा के अध्यक्ष जसविंदर सिंह ने कहा कि सभा पदम देव परिसर में लंगर का आयोजन करेगी।

हिमाचल प्रदेश ड्रोन पॉलिसी-2022 को स्वीकृति प्रदान की गई

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक में हिमाचल प्रदेश ड्रोन पॉलिसी-2022 को स्वीकृति प्रदान की गई।

यह पॉलिसी ड्रोन के उपयोग से शासन एवं सुधार (गरूड़) के आधार पर निर्मित एक समग्र ड्रोन ईको सिस्टम की परिकल्पना को साकार करती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, हिमाचल प्रदेश औद्योगिक निवेश नीति, हिमाचल प्रदेश स्टार्टअप/नवाचार योजना, राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क जैसे संस्थागत संयोजन के माध्यम से डिजिटल स्काई अवसरों का उपयोग करना है, ताकि विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार कर ड्रोन क्षेत्र में उपलब्ध रोजगार के अवसरों तक उनकी पहुंच सुनिश्चित की जा सके। इसका उद्देश्य ड्रोन और सक्षम प्रौद्योगिकी के उपयोग से राज्य में रोजगार के अवसर सृजित करना और प्रदेश की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देना है।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश लॉजिस्टिक्स पॉलिसी-2022 को स्वीकृति प्रदान की। यह नीति योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी के लिए विभिन्न विभागों में समन्वय से राज्य के औद्योगिक विकास को सहयोग प्रदान करने की एक प्रभावशाली लॉजिस्टिक्स तंत्र की परिकल्पना को साकार करती है।

इसका उद्देश्य प्रदेश में अन्तरदेशीय कन्टेनर डिपो, सामान्य सुविधा केन्द्र, इन्टीग्रेटिड कोल्ड चेन, लॉजिस्टिक्स पार्क, ट्रक टर्मिनल, एयर कार्गो, गुणवत्ता प्रशिक्षण प्रयोगशाला इत्यादि विकसित करने के लिए निजी क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा देकर राज्य में लॉजिस्टक्स अधोसंरचना को सुदृढ़ करना है।

बैठक में प्रदेश में अवैध खनन की निगरानी के लिए उद्योग विभाग में खनन निरीक्षक के 12 पद, सहायक खनन निरीक्षक के 24 पद और खनन रक्षक के 24 पदों के सृजन को मंजूरी प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने क्षेत्र के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए जिला सिरमौर के नौहराधार में नव स्वीकृत राजकीय महाविद्यालय के संचालन के लिए विभिन्न श्रेणियों के 16 पद सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में सिरमौर जिला की नाहन तहसील में त्रिलोकपुर, मोगीनन्द और बरमापापड़ी पटवार वृत्तों का पुनर्गठन कर पांच नए पटवार वृत्त पालियों, अम्बवारा सैनवाला, कालाअम्ब, देवनी और नागल सुकेती के सृजन को स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक में कांगड़ा जिला की उप-तहसील रे के हटली और मलहान्टा के मौजूदा पटवार वृतों का पुनर्गठन कर नया पटवार वृत्त नंगल बनाने के अतिरिक्त पटवार वृत्त मलहान्टा में पटवार वृत्त अग्हार के दो मुहाल शामिल करने को भी स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक में बस अड्डा बाबा बरोह के निर्माण के लिए कांगड़ा जिला की बरोह तहसील के मौजा दनोआ में 00-46-08 हेक्टेयर वन भूमि हिमाचल प्रदेश सड़क परिवहन निगम के पक्ष में 99 वर्ष की लीज आधार पर देने का निर्णय लिया गया।

मंत्रिमण्डल ने मण्डी जिला के निहरी और कुल्लू जिला के जरी स्थित धौंकड़ा में नई अग्निशमन चौकियां खोलने तथा लाहौल-स्पीति जिला के उदयपुर और चम्बा जिला के किलाड़ में दो नए उप अग्निशमन केन्द्र खोलने का निर्णय लिया। मंत्रिमण्डल ने शिमला जिला के चौपाल, सिरमौर जिला के शिलाई और लाहौल-स्पीति जिला के केलांग स्थित तीन अग्निशमन चौकियों को स्तरोन्नत कर उप अग्निशमन केन्द्र बनाने तथा विभिन्न श्रेणियों के 129 पद सृजित कर भरने सहित इन केन्द्रों के प्रभावी प्रबन्धन के लिए 16 वाहनों को भी स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में कांगड़ा जिला के फतेहपुर विधानसभा क्षेत्र में राजकीय उच्च पाठशाला बरोट को स्तरोन्नत कर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला करने, मण्डी जिला के द्रंग क्षेत्र में स्थित राजकीय माध्यमिक पाठशाला सकरयार, सरकाघाट क्षेत्र की राजकीय माध्यमिक पाठशाला कलखर और सिरमौर जिला के पच्छाद क्षेत्र में स्थित राजकीय माध्यमिक पाठशाला मण्डी खड़ाना को राजकीय उच्च पाठशालाओं में स्तरोन्नत करने तथा सिरमौर जिला के पच्छाद क्षेत्र की राजकीय प्राथमिक पाठशाला धड़ीक डिंगरी को राजकीय माध्यमिक पाठशाला में स्तरोन्नत करने तथा विभिन्न श्रेणियों के 20 पदों को सृजित कर भरने को भी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने मण्डी जिला के राजकीय माध्यमिक विद्यालयों पलाहीधार और घैणीध को राजकीय उच्च विद्यालयों में स्तरोन्नत करने और मण्डी जिला के राजकीय प्राथमिक विद्यालय काण्ढी को राजकीय माध्यमिक विद्यालय में स्तरोन्नत करने और इन विद्यालयों में 11 पदों को सृजित कर भरने को स्वीकृति प्रदान की

मंत्रिमण्डल ने मण्डी जिला की नगर परिषद सुन्दरनगर के बाड़ी में नया पशु औषधालय स्थापित करने और यहां विभिन्न श्रेणियों के दो पदों को सृजित कर भरने की भी स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में मण्डी जिला की बालीचौकी तहसील के अन्तर्गत पशु औषधालय थाची को पशु अस्पताल में स्तरोन्नत कर विभिन्न श्रेणियों के तीन पदों के सृजन व भरने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने मण्डी जिला की थुनाग तहसील के शिकावरी और काण्डी पटवार वृत्त को पुनर्गठित कर नए पटवार वृत्त मुरहाग को सृजित करने की स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने कानून-व्यवस्था सम्बन्धी मामलों के त्वरित निपटान के लिए रेलवे पुलिस स्टेशन शिमला के अंतर्गत सोलन जिले के टकसाल में राजकीय रेलवे पुलिस की सीमा चौकी परवाणू को फिर से खोलने का भी निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने मंडी जिला के धर्मपुर स्थित जल शक्ति विभाग में अधीक्षण अभियंता, यांत्रिकी का एक पद सृजित करने को स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने कांगड़ा जिला में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र चंडी को स्तरोन्नत कर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनाने का भी निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल की बैठक में लोगों की सुविधा के लिए कांगड़ा जिला में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नगरोटा सूरियां की बिस्तर क्षमता 6 से बढ़ाकर 50 बिस्तर कर स्तरोन्नत करने और इसके सुचारू संचालन के लिए विभिन्न श्रेणियों के 27 पद सृजित कर भरने का भी निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने सोलन जिले के दाड़लाघाट में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने व इसके सुचारू संचालन के लिए विभिन्न श्रेणियों के 8 पदों को भरने का भी निर्णय लिया।

मुख्यमंत्री ने कॉन्शियस प्लैनेट-द वे फॉरवर्ड कार्यक्रम में भाग लिया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर नई दिल्ली के विज्ञान भवन में ईशा फाउंडेशन द्वारा आयोजित कॉन्शियस प्लैनेट-द वे फॉरवर्ड कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लोगों को संबोधित किया।

योगी, आध्यात्मिक गुरु और फाउंडेशन के संस्थापक सद्गुरु ने अपने आंदोलन सेव सॉयल के बारे में विस्तार से बताया।

इस गहन चिन्तन सत्र को आयोजित करने का उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जागरूक विश्व तैयार करने पर विचार-विमर्श करना है।

इस सत्र में केंद्रीय मंत्रियों, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े हुए लोगों और स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

स्मार्ट सिटी मिशन द्वारा विश्व साइकिल दिवस पर साइक्लोथॉन और जागरूकता अभियान रैली का आयोजन

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर पुलिस ग्राउंड धर्मशाला में साइक्लोथॉन और जागरूकता अभियान रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस रैली का समापन युवा सेवाएं और खेल इंडोर कॉम्प्लेक्स में हुआ। रैली का आयोजन धर्मशाला स्मार्ट सिटी मिशन द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इससे साइकिल का उपयोग करने के संदेश का प्रचार-प्रसार करने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि साइकिल न केवल यातायात का प्रदूषण रहित दोपहिया साधन है, बल्कि यह शारीरिक फिटनेस को भी बढ़ावा देता है। उन्होंने इस आयोजन में भाग लेने के लिए युवाओं की सराहना करते हुए कहा कि यह अन्य युवाओं को आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होगा।

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने सर्किट हाउस धर्मशाला में जन शिकायतें भी सुनीं।

विधायक विशाल नेहरिया, अर्जुन सिंह, अरुण कुमार और जिया लाल, नगर निगम महापौर ओंकार नेहरिया, कांगड़ा केंद्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष डॉ. राजीव भारद्वाज, उपायुक्त डॉ. निपुण जिंदल, आयुक्त स्मार्ट सिटी मिशन प्रदीप ठाकुर और पुलिस अधीक्षक डॉ. खुशाल शर्मा तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

वित्त वर्ष के प्रथम दो माह में जीएसटी संग्रहण में 49 प्रतिशत की वृद्धि

शिमला/शैल। राज्य कर एवं आबकारी विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि इस वित्त वर्ष के प्रथम दो माह में प्रदेश में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रहण में 49 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है और मई, 2022 में यह 390 करोड़ रुपये रहा है।

उन्होंने कहा कि यह वृद्धि करदाताओं में कर अदायगी सम्बन्धी अनुपालना में सुधार तथा विभाग द्वारा उठाए गए विभिन्न प्रशासनिक एवं नीतिगत प्रयासों तथा प्रवर्तन प्रणाली के सुदृढ़ीकरण से सम्भव हो पाई है। इस वृद्धि का दूसरा मुख्य कारण पिछले वित्त वर्ष की अन्तिम तिमाही में जीएसटी रिटर्न सम्बन्धी दी गई छूट है। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी की दूसरी लहर से उत्पन्न आर्थिक विषमताओं के कारण दी गई छूट से जीएसटी संग्रहण में विगत वर्ष की तुलना में यह कमी दर्ज की गई थी।

विभाग द्वारा चालू वित्तीय वर्ष में लगभग 25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। रिटर्न फाइलिंग में लगातार सुधार, तेज रिटर्न की जांच, जीएसटी ऑडिट को समय पर पूरा करना और मजबूत प्रवर्तन विभाग के लिए लक्षित क्षेत्र बने हुए हैं। विभाग ने पिछले वर्ष अपने रोड चौकिंग अभियान में किए गए करीब ढाई लाख ई-वे बिल के सत्यापन में और सुधार का लक्ष्य रखा है। विभाग समय सीमा के साथ स्वैच्छिक अनुपालन में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है और टैक्स हाट कार्यक्रम के तहत हितधारकों के मुद्दों का निवारण किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार ने कर अधिकारियों के निरंतर क्षमता निर्माण के लिए हाल ही में जीएसटी प्रशिक्षण प्रकोष्ठ की स्थापना को स्वीकृति प्रदान की है। राज्य मंत्रिमण्डल द्वारा राजस्व लक्ष्य प्राप्त करने के लिए विभागीय पुनर्गठन को भी सैद्धान्तिक मंजूरी प्रदान की गई है।

इस दुनिया में सभी भेद-भाव किसी स्तर के हैं, ना कि प्रकार के, क्योंकि एकता ही सभी चीजों का रहस्य है।
.....स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

सत्ता के 8 वर्षों में उभरे कुछ सवाल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देश की सत्ता संभाले आठ वर्ष पूरे हो गये हैं। इन आठ वर्ष का कार्यकाल पूर्ण होने पर प्रधानमंत्री ने इसे गरीब कल्याण सम्मेलन का नाम देते हुए देश को संबोधित किया। इस संबोधन के लिये शिमला का चयन किया गया था। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर एक बड़ी बात यह कही है कि आठ वर्षों में उन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया है जिस पर देश को शर्मिंदा होना पड़ा। प्रधानमंत्री के इस दावे का आकलन करने के लिए 2014 के अन्ना आंदोलन के दौरान देश के सामने क्या परोसा गया था उस पर नजर डालना आवश्यक हो जाता है। उस समय की सरकार को भ्रष्टाचार का पर्याय प्रचारित किया गया था। क्योंकि उस समय 2G स्पेक्ट्रम पर सीएजी की रिपोर्ट आ गई थी। इस रिपोर्ट में 2G स्पेक्ट्रम के आवंटन में 1,76,000 करोड़ का घपला होने का खुलासा किया गया था। लेकिन इस पर चली जांच में उसी सी ए जी विनोद राय ने यह कहा कि उन्हें इस गणना में गलती लगी है और कोई घपला नहीं हुआ है। इसके लिए विनोद राय ने अदालत से क्षमा याचना भी की है। उसके खिलाफ मानहानि का मामला इसलिए नहीं बना क्योंकि विनोद राय संवैधानिक पद पर थे। अन्ना का आंदोलन संघ का प्रायोजित था यह सब जानते हैं। इस एक कदम झूठे मामले से देश की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचा है। क्या इस झूठ के बेनकाब होने पर आंदोलन के प्रायोजकों को देश से क्षमा नहीं मांगनी चाहिए थी। आज गरीब के लिए जिन योजनाओं पर सम्मेलन को संबोधित किया जा रहा है क्या उसका एक सच यह नहीं है कि इस गरीब को जो उसके जमा पर 2014 में जो ब्याज मिलता था वह अब आधा क्यों रह गया है? शुन्य बैलेंस के नाम से खोले गए जन-धन खातों में 1000 और 500 के न्यूनतम शेष की शर्त क्यों लगा दी गई? उस न्यूनतम पर खाता धारक को कोई लाभ क्यों नही मिलता? उज्जवला योजना के तहत बांटे गये गैस सिलेंडरों को हिमाचल में ही 65% लाभार्थी रिफिल नहीं करवा पाये हैं क्या यह गर्व करने का विषय है या शर्म महसूस करने का? गरीब के कल्याण के नाम पर क्या गरीब को ही महंगाई और बेरोजगारी की मार से सबसे ज्यादा नहीं ठगा गया? नोटबंदी जब घोषित की गयी थी तब प्रधानमंत्री ने इसके लाभ गिनवाते हुए यह दावा किया था कि भविष्य में जाली नोट छपने बंद हो जाएंगे। नए नोटों में कई सुरक्षात्मक प्रावधान होने के दावे किए गए थे। लेकिन इसका सच यह रहा है कि 99.6% पुराने नोट नये नोटों से बदल लिए गये। शेष बचे 0 .4% नेपाल में नोटबन्दी प्रभावी न होने से नहीं बदले जा सके। इस तरह क्या शत प्रतिश्त पुराने नोट नये नोटों से नही बदले गये? फिर अब रिजर्व बैंक ने 2021-22 के लिये जो रिपोर्ट जारी की है उसमें साफ स्वीकारा गया है कि 10रूपये के नोट से लेकर 2000रूपये तक के हर मूल्य के जाली नोट अब भी छप रहे हैं। पूरे आंकड़े जारी किये गये हैं। 500रूपये के नोटों में यह आंकड़ा 101.7% बताया गया है। क्या नोटबंदी के बाद भी जाली नोटों का छपना जारी रहना किसी भी तर्क से गर्व का विषय हो सकता है? अब जब कोरोना आया तब सबसे पहले आरोग्य सेतु एप डाउनलोड करना अनिवार्य किया गया। ऐसा न करने पर बहुत सारी बंदिशे घोषित की गयी। लेकिन जब यह मामला अदालत तक पहुंचा तो सरकार ने इस पर पूरी अनभिज्ञता प्रकट करते हुये साफ कहा कि सरकार ने इसे जारी नहीं किया है। इसी तरह टीकाकरण को लेकर हर तरह की बंदिशे जारी हुई। लेकिन यह मामला भी जब सर्वोच्च न्यायालय में पहुंचा तो सरकार ने अपने जवाब में कहा कि टीका लगवाना अनिवार्य नहीं किया गया है यह एकदम ऐच्छिक है। कोरोना को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने महामारी घोषित नहीं किया है यह सामने आ चुका है। लेकिन इसी कोरोना को भगाने के लिये प्रधानमंत्री के आग्रह पर देश ने ताली थाली बजायी दीपक जलाये। क्या किसी और देश ने बीमारी को भगाने के लिये ऐसा कदम उठाया है? क्या इस पर आप शर्म कर पायेंगे? प्रधानमत्री की व्यक्तिगत बौद्धिकता को लेकर तो कई सवाल चर्चा में है। जिस विषय 'टोटल पाल्टिकल साइंस' में स्नातकोतर होने का दावा करते हैं वह देश के किस विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाता है यह आज तक सामने नहीं आया है। आज जब शासन के आठ वर्ष पूरे होने पर देश के सामने इस तरह के दावे किये जाएंगे तो स्वभाविक रूप से आर्थिक स्थिति को लेकर दर्जनों सवाल पूछे जाएंगे। वह सारे सवाल और दावे उछलेंगे ही जो 2014 के आंदोलन के दौरान पूछे जा रहे थे। जिस संसद को अपराधियों से मुक्त करवाने का दावा किया गया था वहां लोकसभा के 539 चयनित माननीय में से 43% अपराधिक छवि के हैं। इसमें कोई भी दल अछूता नहीं है। भाजपा 133 के आंकड़े के साथ शीर्ष पर है क्या यह सब गर्व का विषय है यह निर्णय आप स्वयं करें क्योंकि संभव है कि आपके हिंदुत्व के आगे यह कुछ भी न हो।

सामुदायिक रेडियो: समुदाय से जुड़े प्रासंगिक कार्यक्रमों के माध्यम से सकारात्मक बदलाव को समर्थन

सुश्री एस्थर कार
स्वतंत्र मीडिया सलाहकार,
शोधकर्ता और सामुदायिक रेडियो प्रेमी
पूर्व महानिदेशक, पीआईबी, भारत सरकार

छोटा सुंदर होता है। भारत में सामुदायिक रेडियो की कहानी इस कहावत का सटीक उदहारण है। सामाजिक लक्ष्यों के प्रति जागरूकता पैदा करने, समुदायों को प्रभावित करने एवं सकारात्मक बदलाव लाने के लिए लोगों की भागीदारी को प्रेरित करने से जुड़ी सामुदायिक रेडियो की क्षमता में ही इसकी सुंदरता निहित है। बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के लिए इप्सोस द्वारा हाल में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि हाथ धोने और सैनिटाइज़र का उपयोग करने के महत्व के बारे में जागरूकता को लेकर जिन जिलों में सामुदायिक रेडियो अभियान चलाया गया था, उनमें कोविड-19 संक्रमण के मामलों में 7.5 प्रतिशत की कमी देखी गयी थी। यह कमी आधार श्रेणी के उन जिलों की तुलना में दर्ज की गयी, जहां उक्त अभियान नहीं चलाया गया था।

यह स्थानीय लोगों की क्षमता बढ़ाने में सामुदायिक रेडियो के प्रभाव को प्रदर्शित करता है, ताकि कई तरह की सामाजिक समस्याओं से निपटने के लिए साथ मिलकर काम किया जा सके। शिक्षा, युवा, स्वास्थ्य और कृषि जैसे विषयों पर सभी प्रकार के उपयोगी कार्यक्रम स्थानीय लोगों द्वारा तैयार किये जा सकते हैं और समुदाय के लाभ के लिए सामुदायिक रेडियो के माध्यम से इन्हें प्रसारित किया जा सकता है। अधिकांश रेडियो कार्यक्रम सहभागी प्रकृति के होते हैं, जिसमें ग्रामीण लोगों को शामिल किया जाता है। सामुदायिक रेडियो की मदद से विकास सूक्ष्म स्तर तक पहुंच सकता है और यह निश्चित रूप से एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन ला सकता है।

पिछले आठ वर्षों में, देश में सामुदायिक रेडियो अभियान में तेजी आयी है, क्योंकि 2014 की तुलना में सामुदायिक रेडियो स्टेशनों (सीआरएस) की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है। आज, 356 सीआरएस स्थानीय बोलियों सहित विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं और समुदायों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं, जबकि मुख्यधारा की मीडिया में उनकी बात को हमेशा पर्याप्त स्थान या समय नहीं मिल पाता है।

हालांकि, समुदाय ही सीआरएस की सफलता के आधार होते हैं, लेकिन भारत सरकार ने सक्रिय रूप से इनका समर्थन किया है। वित्त वर्ष 2021-26 की अवधि के लिए 'भारत में सामुदायिक रेडियो अभियान का समर्थन' नाम से एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना तैयार की गई है। यह ध्यान में रखते हुए कि गैर-लाभकारी संगठनों के पास सीमित संसाधन होते हैं, सामुदायिक रेडियो स्थापित करने के लिए संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इसके अलावा, जरूरत पड़ने पर उपकरणों के नवीनीकरण/प्रतिस्थापन के लिए भी सहायता प्रदान की जाती है, जिसमें आपातकालीन अनुदान भी शामिल है। सीआरएस अभियान को बढ़ावा देने और नए व संभावित सीआरएस को विभिन्न तरह की सहायता देने से जुड़ी लीड कम्युनिटी स्टेशन की अवधारणा को वर्ष 2021 में पेश किया गया था। विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से लीड सीआरएस के रूप में कुल 24 सीआर स्टेशनों को चुना गया है। हाल ही में, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने एक ब्रॉडकास्ट सेवा पोर्टल लॉन्च किया है, जहां इच्छुक संगठन सीआरएस अनुमति के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। सीआरएस को एआईआर से प्राप्त समाचार और समसामयिक कार्यक्रमों को अपने मूल रूप में या स्थानीय भाषा/बोली में अनुवादित रूप में प्रसारित करने की अनुमति है। राजस्व प्राप्ति को समर्थन देने के लिए, सीआरएस पर विज्ञापन की अधिकतम अवधि भी प्रसारण प्रति घंटे के 5 (पांच) मिनट से बढ़ाकर प्रति घंटे 7 (सात) मिनट कर दी गई है। सभी हितधारकों, नीति निर्माताओं, मीडिया, विभिन्न सरकारी विभागों / मंत्रलयों, संयुक्त राष्ट्र निकायों और सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को एक साथ लाने के लिए राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर सामुदायिक रेडियो सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम निर्माण को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष राष्ट्रीय सामुदायिक रेडियो पुरस्कार भी प्रदान किए जा रहे हैं।

इस बात के पर्याप्त उदाहरण मौजूद हैं कि सामाजिक और सामुदायिक कल्याण के लिए एक सक्रिय एजेंट होने के रूप में सीआरएस बहुत प्रभावी होते हैं। डिब्रूगढ़, असम में स्थित, ब्रह्मपुत्र सामुदायिक रेडियो स्टेशन, जिसका लोकप्रिय नाम 'रेडियो ब्रह्मपुत्र' है, की स्थापना वर्ष 2015 में उत्तर-पूर्व अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र (सी-एनईएस) द्वारा की गई थी। यह जिलों के वंचित समुदायों के साथ काम करता है (जो चाय बागान, नदी के किनारे और अन्य मुख्य भूमि गांवों में रहते हैं। जनसंख्या संरचना और विविध जातीय समूहों के आधार पर, यह 5 अलग-अलग भाषाओं और बोलियों - असमिया, मिसिंग, सदरी (चाय समुदाय की बोली), हाजोंग, देवरी - में कार्यक्रमों का निर्माण और प्रसारण करता है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, पर्यावरण, आपदा, कृषि, लोक संगीत और संस्कृति से संबंधित मुद्दों पर आधारित होते हैं। यह प्रतिदिन 14 घंटे का प्रसारण करता है। वायनाड जिले के द्वारका में स्थित सामुदायिक रेडियो मटोली, रेडियो और विजुअल मीडिया दोनों में, करियर से जुड़ी आकांक्षाओं को आगे बढ़ाने के क्रम में कई स्थानीय प्रतिभाओं के लिए एक लॉन्च पैड के रूप में उभरा है। जनजातीय संस्कृति और परंपरा को स्थानीय जनजातीय लोगों द्वारा जनजातीय बोली में निर्मित कार्यक्रमों के माध्यम से बढ़ावा दिया जाता है। दूसरी ओर, उड़ीसा में, रेडियो नमस्कार, पुरी जिले के कोणार्क के निकटवर्ती क्षेत्र में स्थित 4 ब्लॉकों (गोप, निमापाड़ा, काकटपुर और अस्तरंगा) के 700 से अधिक गांवों तक पहुंचता है। रेडियो ने इस इलाके के सभी बच्चों की स्कूल में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए एक अभियान 'चला स्कूल कू जीबा' (चलो स्कूल चलें) शुरू किया है। इन कार्यक्रमों का ऐसा प्रभाव पड़ा है कि स्कूल छोड़ चुके 5 गांवों के सभी छात्र फिर से स्कूल वापस आ गए। सरकारी प्राधिकरण ने इन गांवों को ऐसा क्षेत्र घोषित किया है, जहां किसी भी बच्चे ने स्कूल नहीं छोड़ा (जीरो ड्रॉप आउट जोन) है। हरियाणा के नूंह में, सामुदायिक रेडियो अल्फाज़-ए-मेवात ने कोविड प्रकोप और लॉकडाउन के दौरान शानदार भूमिका निभाई है। इस रेडियो स्टेशन ने बिना किसी व्यवधान के लगातार प्रसारण किया और कोविड रोकथाम और जागरूकता पर सूचना प्रदाता के रूप में काम किया।

ये केवल कुछ उदाहरण हैं। सीआरएस भारत में प्रभावी हैं, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से 'समुदाय के, समुदाय के लिए और समुदाय द्वारा' के आदर्श वाक्य के साथ सेवा प्रदान करते हैं। सामुदायिक रेडियो ने देश के ग्रामीण, वंचित और दूरदराज इलाकों में रहने वाले समुदायों के जीवन में विकास और परिवर्तन से जुड़े बदलाव लाने में स्वयं को एक अग्रणी माध्यम के रूप में स्थापित किया है। -

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना से हो रहा युवाओं का कौशल संवर्द्धन, रोजगार और स्वरोजगार के मिल रहे हैं पर्याप्त अवसर

युवा राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं और इस निधि का सही उपयोग करने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा केंद्र और राज्य सरकार की नवोन्मेषी योजनाओं के माध्यम से युवाओं का कौशल संवर्द्धन किया जा रहा है। ग्रामीण युवाओं को संगठित और असंगठित क्षेत्र में रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से प्रदेश में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना (डीडीयू-जीकेवाई) का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है ।

यह योजना केन्द्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय की एक महत्वाकांक्षी योजना है। योजना का मुख्य उद्देश्य गरीब ग्रामीण युवाओं को कौशल प्रदान कर उन्हें न्यूनतम मजदूरी या नियमित मासिक वेतन पर रोजगार उपलब्ध करवाना है। इस योजना के अन्तर्गत 70 प्रतिशत प्रशिक्षित युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में निश्चित रोजगार उपलब्ध करवाने का प्रयास किया जाता है। प्रशिक्षुओं को नि:शुल्क प्रशिक्षण के साथ नि:शुल्क छात्रावास की सुविधा भी प्रदान की जाती है। प्रत्येक कोर्स की अवधि 3 से 12 महीने की होती है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात एक वर्ष के लिए प्रशिक्षुओं की पोस्ट प्लेसमेंट ट्रैकिंग की जाती है।

इस योजना के तहत परिधान, आतिथ्य, ग्रीन जॉब्स, ब्यूटिशियन, सिलाई मशीन ऑपरेटर, बेकिंग, स्टोरेज ऑपरेटर, स्पा, अनआर्म्ड सिक्योरिटी गार्ड, इलेक्ट्रीशियन, सेल्स एसोसिएट, अकॉउंटिंग, बैंकिंग सेल्स रिप्रेजेन्टेटिव, कंप्यूटर हार्डवेयर असिस्टेंट, टेली एक्सीक्यूटिव -लाइव साइंसेज आदि ट्रेड्स के अन्तर्गत चलाये जा रहे हैं।

वर्तमान में डिजिटल स्किल, सोशल मीडिया, इलैक्ट्रॉनिक, विजुअलाइजेशन, टेलिविजन और मोबाइल रिपेयर जैसे क्षेत्रों में रोजगार, स्वरोगार और रोजगार सृजन के अपार अवसर हैं। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना में विभिन्न ट्रेड्स के अन्तर्गत युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान कर उनके कौशल में विकास किया जाता है। प्रदेश सरकार इन ट्रेडस के माध्यम से अर्द्धकुशल और कुशल युवाओं को आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर कर रही है।

इस योजना के अन्तर्गत 6681 युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। वर्तमान में प्रदेश भर में विभिन्न केंद्रों के माध्यम से 1800 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसी के साथ प्रदेश के 3500 प्रशिक्षुओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये गये हैं।

इस योजना का लाभ लेने के लिए गरीब ग्रामीण युवाओं के लिए आयु सीमा 15-35 तथा कमजोर वर्ग जैसे दिव्यांग, महिलाओं तथा अन्य कमजोर वर्गो के लिए आयु सीमा 45 वर्ष निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवार, मनरेगा, श्रमिक परिवार जिनके किसी सदस्य द्वारा वित्त वर्ष में कम से कम 15 दिन का कार्य किया गया हो, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना कार्डधारक युवा जिसमें युवाओं के विवरण का उल्लेख किया गया हो, जिनके पास अन्त्योदय अन्न योजना/बीपीएल/पीडीएस कार्ड जारी किए गए हों, जिन परिवार के सदस्य एनआरएलएम के तहत स्वयं सहायता समूह के सदस्य और सामाजिक एवं आर्थिक जातिगत की गणना 2011 के रूप में ऑटो इन्क्लूजन मापदंडों के तहत कवर किए गए परिवार भी इस योजना के तहत पात्र होंगे।

दीन दयाल कौशल योजना से युवाओं के सपनों को आकार मिल रहा है। सोलन जिला के अर्की के सवावा गांव की हर्षा के लिये यह योजना आशा की किरण बनकर आयी। हर्षा की दिलचस्पी फैशन डिजाइनिंग की ओर थी, परन्तु घर की आर्थिक परिस्थिति अच्छी न होने के कारण वे फैशन डिजाइनिंग से सम्बन्धित कोर्स नहीं का पा रही थीं। स्थानीय अधिकारियों द्वारा डीडीयू- जीकेवाई की जानकारी उपलब्ध होने के पश्चात उन्होंने वर्ष 2021 में फैशन डिजाइनिंग ट्रेड का तीन माह का कोर्स पूर्ण किया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात उन्होंने डीडीयू-जीकेवाई के प्लेसमेंट सेल में सम्पर्क किया तथा कुछ समय बाद उन्हें बैंगलुरू की एक निजी फर्म ने मशीन ऑपरेटर पद के लिए चयनित किया है। उनका कहना है कि डीडीयू-जीकेवाई उनके सपनों को साकार करने में सहायक सिद्ध हुई है।

इस योजना का लाभ उठाकर प्रदेश के युवा हुनरमंद बनकर रोज़गार और स्वरोज़गार के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा से अस्पताल की चार दीवारी से बाहर अति दुर्गम, ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंची स्वास्थ्य सेवाएं

मोबाईल मेडिकल यूनिट के माध्यम से अब तक कुल 104608 लोगों की ओपीडी जांच और 74273 लोगों के किए विभिन्न प्रकार के लैब टैस्ट

प्रदेश के दुर्गम ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को सुदृढ़ करना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। स्वास्थ्य सुविधाओं को स्वास्थ्य संस्थानों की चारदीवारी से बाहर निकाल गांव-गांव व घर-घर तक पहुंचाने की दिशा में राज्य सरकार ने कई अभिनव पहल की हैं। इसमें दुर्गम व ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को घर द्वार पर बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं संभव हुई हैं।

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की संवेदनशील सोच एवं प्रदेश सरकार की सर्वस्पर्शी विकास की नीति को आत्मसात करते हुए दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा पहुंचाने के उद्देश्य से जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा व मोबाईल मेडिकल यूनिट सेवा शुरू की गई है। इन सेवाओं के माध्यम से राज्य में पहली बार अति दुर्गम व स्वास्थ्य सुविधा से वंचित और पिछड़े क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाने को प्राथमिकता प्रदान की जा रही हैं। जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा में चिकित्सक व अन्य पैरामेडिकल स्टाफ तैनात कर गांव-गांव व घर-घर मरीजों की जांच कर उनका उपचार सुनिश्चित किया है।

राज्य में यह पहला मौका था जब स्वास्थ्य सुविधाओं को मोबाइल हेल्थ यूनिटों के माध्यम से अस्पतालों की चार दीवारी से बाहर निकाल गांव तक पहुंचाया गया। जिसके लिए राज्य सरकार ने स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से लगभग 10 जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस तैनात की। इन मोबाइल मेडिकल यूनिटों के माध्यम से बी.पी, मधुमेह और कैंसर सहित अन्य बीमारियों की जांच करने के साथ-साथ ओपीडी की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जा रही है। स्वास्थ्य जांच के उपरांत मरीजों को बीमारी से संबंधित उपचार व दवाईयां भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

आरम्भिक चरण में राज्य के 7 जिलों चंबा, कांगड़ा, कुल्लू, मंडी, शिमला, सिरमौर और सोलन के दुर्गम क्षेत्रों में जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। कांगड़ा, मंडी और शिमला जिला में दो-दो और चंबा, कुल्लू, सिरमौर और सोलन जिला में एक-एक जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस तैनात की गई है। इस सेवा के माध्यम से गत एक वर्ष के दौरान दुर्गम क्षेत्रों में 2131 कैंप लगाए गए। 86544 ओपीडी, एनसीडी यानि बी.पी. शुगर जैसी बीमारी से संबंधित 15588 मामलों की जांच, 1352 गर्भवती महिलाओं की जांच और विभिन्न बीमारियों से संबंधित 64440 टेस्ट इस सेवा के माध्यम से किए गए। जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा के माध्यम से अब तक कुल 104608 लोगों की ओपीडी जांच और 74273 विभिन्न प्रकार के लैबोरेटरी टैस्ट किए जा चुके है।

कोविड-19 संकट के दौरान भी जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा ने बहुमूल्य मानव जीवन को बचाने के लिए बेहतरीन कार्य किया है। कोविड काल में मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर के दिशा-निर्देशानुसार स्वास्थ्य सुविधाओं को ग्रामीण व दुर्गम क्षेत्रों में पहुंचाने का कार्य जीवन धारा मोबाइल एंबुलेंस सेवा ने किया हैं। इस महामारी से बचाव के दृष्टिगत कोविड टीकाकरण, सामान्य बीमारों को उपचार सुविधा, घर-घर दवाईयों की पहुंच सुनिश्चित कर राज्य सरकार ने इस सेवा के द्वारा आम लोगों को सुविधा उपलब्ध करवाई है।

प्रदेश में किडनी के गंभीर रोगों से पीड़ित मरीजों को राहत प्रदान करने व ऐसे मरीजों को घर गांव में डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से उत्तराखंड राज्य की द हंस फाउडेशन धर्माथ ट्रस्ट के सहयोग से किडनी की बीमारी से ग्रस्त मरीजों को घर द्वार पर सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। जिसके लिए राज्य सरकार ने 5 जनवरी, 2022 को इस ट्रस्ट के साथ एमओयू हस्ताक्षरित कर प्रदेश में 40 मेडिकल मोबाईल यूनिट व 10 डायलिसिस केंद्र शुरू किए हैं, जिनमें किडनी की बीमारी के नि:शुल्क उपचार की सुविधा उपलब्ध हैं। इस सेवा को मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर द्वारा राज्य में विधिवत रूप से 10 मार्च, 2022 को आरम्भ किया गया है।

प्रदेश में द हंस फाउडेशन धर्माथ ट्रस्ट के सहयोग से स्थापित किए जा रहे 10 डायलिसिस केंद्रों में जहां किडनी की बीमारी से ग्रस्त मरीजों को नि:शुल्क सुविधा मिली है, वहीं मोबाईल मेडिकल वाहन गांव-गांव जाकर लोगों की नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच कर उन्हें दवाईयां भी उपलब्ध करवा रहे हैं। इन वाहनों में डॉक्टरों सहित स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करवाने वाली टीम तैनात की गई है। जिसमें एक डॉक्टर, एक तकनीशियन, एक फार्मासिस्ट व एक सामाजिक सुरक्षा अधिकारी तैनात किया गया हैं।

राज्य के लोगों को घर द्वार पर स्वास्थ्य सुविधा मिले इसके लिए राज्य सरकार प्रयासरत है। जिसके लिए राज्य सरकार की ओर से हरसंभव कदम उठाए जा रहे हैं।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अन्तर्गत 1.71 लाख किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनायाः मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। वैज्ञानिकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि राज्य के किसानों और बागवानों को लाभान्वित करने के लिए विश्वविद्यालयों और विभिन्न संस्थाओं की प्रयोगशालाओं में किए गए अनुसंधान को खेतों में स्थानांतरित किया जाए। यह बात मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने सोलन जिला के नौणी स्थित डॉ. यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय में आयोजित 12वें द्विवार्षिक राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कही। प्राकृतिक खेती और अन्य सतत् कृषि तकनीक विषय पर आधारित दो दिवसीय सम्मेलन में देशभर से 731 कृषि विज्ञान केन्द्र और विभिन्न राज्यों के 1000 से अधिक वैज्ञानिक और किसान भाग ले रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के किसान मेहनती और परिश्रमी हैं और नई तकनीकें अपनाने में देश के अन्य राज्यों से आगे हैं। उन्होंने राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश के पूर्व राज्यपाल और गुजरात के वर्तमान राज्यपाल आचार्य देवव्रत के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग बहुत हानिकारक है। वर्तमान सरकार ने सत्ता सम्भालने के तीन महीनों के भीतर ही किसानों के दीर्घकालीन कल्याण के लिए प्रदेश में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना आरम्भ की और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए 25 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया और वर्तमान में प्रदेश के लगभग

1.71 लाख से अधिक किसानों ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है।

जय राम ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न मंचों पर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में हिमाचल प्रदेश के प्रयासों की कई बार सराहना की है। उन्होंने कहा कि केन्द्र

सरकार ने देशभर में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए केन्द्रीय बजट में विशेष प्रावधाान किया है। उन्होंने कहा कि रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उत्पादन क्षमता कम होती है, जो चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि हम हिमाचल प्रदेश को कृषि क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से रसायन मुक्त बनाने के लिए कार्य कर रहे हैं और आने वाले 15 वर्षों में राज्य को एक प्राकृतिक कृषि राज्य बनाने की दिशा में अग्रसर हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस वर्ष अन्त तक किसानों की आय दोगुना करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री फसल विविधीकरण पर विशेष बल देते हैं ताकि किसानों की आय को बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भी कृषि अर्थव्यवस्था ने देश की अर्थव्यवस्था को सहारा प्रदान किया। उन्होंने कहा कि इस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों और उन्नत तकनीक अपनाने के कारण आज किसानों द्वारा कृषि, बागवानी और सब्जी उत्पादन के माध्यम से प्रदेश के सकल घरेलू उत्पाद में 10 हजार करोड़ रुपये का योगदान दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक कृषि उत्पादों के विक्रय के लिए प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को बेहतर विपणन सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

उन्होंने प्रदेश के किसानों और बागवानों से विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से समय-समय पर दिए जाने वाले बीजों और रोपण सामग्री की उन्नत किस्मों के सम्बन्ध में निरंतर मार्गदर्शन करने का आग्रह किया। उन्होंने कृषक समुदाय के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे समर्पित प्रयासों की सराहना की। उन्होंने विश्वविद्यालय प्रशासन से फल-सब्जी और सतत् कृषि के क्षेत्र में अपने अनुसंधान को निरंतर आगे बढ़ाने का आग्रह किया ताकि किसान और बागवान लाभान्वित हो सकें।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिकों को भारत में कृषि एवं बागवानी के भविष्य को और अधिक सुदृढ़ करने तथा इस क्षेत्र में उभरती प्रौद्योगिकी के बारे में गहन विचार विमर्श करने का अवसर मिलेगा।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने इस अवसर पर प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत में पहली हरित क्रान्ति के दौरान भारत की मिट्टी में 2.5 जैविक कार्बन थी और वर्तमान मिट्टी में 0.5 से भी कम कार्बन है, जो चिन्ता का विषय है। उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि हम प्राकृतिक खेती को अपनाएं इससे न केवल मृदा स्वास्थ्य में सुधार होगा बल्कि कृषि उत्पादन में भी वृद्धि होगी, जिससे किसानों की आर्थिकी में बढ़ोतरी होगी।

इस अवसर पर आचार्य देवव्रत ने वैज्ञानिकों से प्राकृतिक खेती के संबंध में अपने व्यक्तिगत विचार भी साझा किए।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने आईसीएआर और विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा प्रकाशित किए गए प्रकाशनों का भी विमोचन किया।

इस अवसर पर प्राकृतिक खेती पर आधारित लघु फिल्म 'प्रकृति' भी प्रदर्शित की गई।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने नई दिल्ली से कार्यक्रम को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि भारत विकास के क्षेत्र में विश्वभर में अग्रणी राज्य के रूप में उभरा है। उन्होंने कहा कि प्रयोगशालाओं में किए जाने वाले अनुसंधान को खेतों तक ले जाना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाना वैज्ञानिकों और किसानों का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि पहले कृषि में उर्वरकों का कम से कम उपयोग होता था, जो वर्तमान में कई गुना बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का अधिक से अधिक उपयोग करना आवश्यक है, लेकिन इसके साथ ही रासायनिक उर्वरकों का कम से कम उपयोग किया जाना चाहिए।

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री कैलाश चौधरी ने कहा कि किसानों की कड़ी मेहनत, समर्पण और देश के वैज्ञानिकों के प्रभावी अनुसंधान के फलस्वरूप देश में अनाज, बाजरा, तिलहन, फल, कपास, गन्ना आदि का रिकॉर्ड उत्पादन हो रहा है। उन्होंने कहा कि खाद्यान्न उत्पादन के मामले में भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दृढ़ प्रयास किए जाने चाहिए।

आईसीएआर के निदेशक डॉ. त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि आईसीएआर आज देशभर के किसानों के लिए विश्वास के प्रतीक के रूप में उभरा है। उन्होंने कहा कि महामारी के दौरान भी कृषि उत्पादन बढ़ा है और इसका श्रेय देश के किसानों और आईसीएआर के उचित शोध और मार्गदर्शन को जाता है। उन्होंने किसानों की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए टिकाऊ खेती पर बल देते हुए कहा कि दो दिवसीय विचार मंथन सत्र इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

इस अवसर पर विस्तार शिक्षा आईसीएआर के उप महानिदेशक डॉ. ए.के. सिंह ने मुख्यमंत्री अन्य गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया।

डॉ. वाई.एस. परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

कृषि मंत्री वीरेंद्र कंवर, सचिव कृषि राकेश कंवर, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, वैज्ञानिक और प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले प्रगतिशील किसान और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

नशा निरोधक कानून प्रवर्तन विभागों के अधिकारियों के लिए क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा कि राज्य में नशा निरोधक कानून के अन्तर्गत एक निश्चित प्रक्रिया के अन्तर्गत कार्य हो रहा है और हमें इन मामलों को भावनात्मक ढंग से भी सुलझाने के लिए सक्रिय प्रयास करने होंगे। उन्होंने

कहा कि भावनात्मक प्रेरक कार्यक्रम के माध्यम से समाज में चेतना लानी होगी तभी इसके सकारात्मक परिणाम सामने आ सकेंगे।

राज्यपाल हिमाचल प्रदेश लोक प्रशासन संस्थान फेयर लॉन के सभागार में हिमाचल प्रदेश नशा निवारण बोर्ड द्वारा संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी) के दक्षिण एशिया कार्यालय के सहयोग से प्रदेश के नशा निरोधक कानून प्रवर्तन विभागों के अन्वेषण तथा पर्यवेक्षी अधिकारियों के लिए आयोजित पांच दिवसीय क्षमता वृद्धि प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि हमें नशे की बुराइयों के बारे में खुलकर चर्चा करनी होगी ताकि भविष्य के लिए प्रभावी कदम उठाए जा सकें। इसके लिए हमें यह विषय बच्चों के साथ भी साझा करना होगा ताकि वे भविष्य में इसके दुष्प्रभावों के बारे में सजग हो सकें।

राज्यपाल ने कहा कि वर्षों से नशे की बुराइयों पर लम्बी व सारगर्भित चर्चाएं हुई हैं लेकिन अब इन चर्चाओं से आगे बढ़ते हुए इस समस्या के समाधान और उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण ज्यादा महत्वपूर्ण है।

राज्यपाल ने कहा कि नशा एक बहुत ही संवेदनशील विषय है और इस दिशा में सरकार द्वारा बनाए गए कानून और नीति को लागू करने के अलावा भावनात्मक रूप से भी इसका समाधान किया जाना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह अपने घर से ही इसकी पहल करें और माता-पिता बच्चों के लिए अच्छी किताबों का चयन और उनमें पढ़ने की आदत डालें। उन्होंने कहा कि हमें बच्चों के साथ समय बिता कर संवाद स्थापित कर उन्हें परिवार से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। उनमें नैतिक मूल्यों का संचार कर माता-पिता इसके लिए पहल करें, तभी इस समस्या का स्थायी समाधान संभव है।

इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एंड क्राइम (यूएनओडीसी) के दक्षिण एशिया कार्यालय के सलाहकार जयंत मिश्रा ने पांच दिवसीय कार्यक्रम की रूपरेखा और यूएनओडीसी की भागीदारी के बारे में विस्तार से बताया।

इससे पूर्व, राज्य कर एवं आबकारी विभाग एवं मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव सुभासीष पंडा ने राज्यपाल का स्वागत किया।

संयोजक एवं सलाहकार, हिमाचल प्रदेश नशा निवारण बोर्ड ओम प्रकाश शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

हिमाचल प्रदेश नशा निवारण बोर्ड के सदस्य सचिव यूनुस ने कार्यक्रम के आयोजन की आवश्यकता के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। अतिरिक्त निदेशक, हिपा ज्योति राणा, यूएनओडीसी के विशेषज्ञ और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

राज्यपाल ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बल्देयां के बच्चों से किया संवाद

शिमला/शैल। राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने शिमला के निकट मशोबरा विकास खंड के अन्तर्गत बल्देयां स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला का दौरा किया। उन्होंने स्कूल की नौंवीं कक्षा के विद्यार्थियों से संवाद किया।

राज्यपाल ने प्रदेश में नई पहल की है। वह किसी भी सरकारी स्कूल में जाकर विद्यार्थियों से बातचीत करते हैं और उन्हें पुस्तकें भेंट कर पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। गत दिनों उन्होंने सोलन के राजकीय दलीप वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का दौरा कर वहां भी नौंवी कक्षा के विद्यार्थियों से संवाद किया था।

राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर प्रातः 11 बजे स्कूल पहुंचे। उन्होंने केवल कक्षा अध्यापक की उपस्थिति में विद्यार्थियों से बातचीत की। उन्होंने बच्चों से सामान्य प्रश्न किए, जो उनकी पढ़ाई की आदत से जुड़े थे। 41 विद्यार्थियों की कक्षा में दो-तीन बच्चों को छोड़कर पाठय पुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकें पढ़ने का शौक न होने पर राज्यपाल ने चिंता जाहिर की। देश की आजादी और स्वतंत्रता आंदोलन के नायकों के नाम तो विद्यार्थी जानते थे, लेकिन उनकी जीवनी किसी ने नहीं पढ़ी।

राज्यपाल ने कहा कि पुस्तकें हमारी दोस्त, चिंतक और मार्गदर्शक होती हैं। उन्होंने कहा कि घर पर अच्छी पुस्तकें रहेंगी तो पढ़ने की आदत बनेगी। उन्होंने कहा कि अकसर अभिभावक कहते हैं कि उनके बच्चे मोबाईल व टेलीविजन देखते हैं लेकिन कितने अभिभावक अपने बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छी पुस्तकें लाते हैं। पुस्तकों का चयन भी अभिभावकों को ही करना है। उन्होंने कहा कि समाज की अधिकांश समस्याएं पढ़ाई की आदत न होने से है।

राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कक्षा के सभी 41 विद्यार्थियों को महापुरूषों की पुस्तकें भेंट की। उन्होंने विद्यार्थियों से आश्वासन लिया कि वे इन पुस्तकों को पढ़ेंगे और इस पर अपनी प्रतिक्रिया के रूप में उन्हें 15 दिनों में पत्र लिखेंगे। उन्होंने कहा कि विद्याथियों को पढ़ने के प्रति प्रोत्साहित करने का यह छोटा सा प्रयास है, जिसे वह भविष्य में भी जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि स्कूल के पुस्तकालय के माध्यम से भी बच्चों को पढ़ने के लिए पुस्तकें दी जानी चाहिए।

इसके उपरान्त, राज्यपाल ने स्कूल के अध्यापकों से भी बातचीत की और स्कूल परिसर में पौधारोपण भी किया।

मुख्यमंत्री ने चंडी में 97.54 करोड़ रुपए की विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने सोलन जिला की दून विधानसभा क्षेत्र के अन्तर्गत चंडी में लगभग 98 करोड़ रुपए की 16 विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास किए।

मुख्यमंत्री ने अपने एक दिवसीय दौरे के दौरान दून विधानसभा क्षेत्र के लिए लगभग 41.71 करोड़ रुपए की 7 विकासात्मक परियोजनाओं के लोकार्पण किए। इनमें चंडी क्षेत्र के लिए बालद खड्ड से 21.69 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित पेयजल योजना का उद्घाटन, 2.69 करोड़ रुपये से पेयजल योजना कैंथा चंडियार विभिन्न पेयजल योजनाओं के स्त्रेतों के सुदृढ़ीकरण, 1.92 करोड़ रुपये लागत से निर्मित होने वाली जिला फॉरेंसिक इकाई बद्दी, 26.82 करोड़ रुपये से पट्टा गोयला चंडी सड़क के उन्नयन कार्य, 12.43 करोड़ रुपये लागत से पट्टा-घरेड़ सड़क के उन्नयन कार्य, काटल की नाली-चंडी घ्याण सड़क पर 2.17 करोड़ रुपये से निर्मित होने वाले पुल, 1.40 करोड़ रुपये लागत के खरोटा पुल तथा ठकराना में 55 लाख रुपये से निर्मित होने वाले आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र का शिलान्यास शामिल है।

जय राम ठाकुर ने चंडी मेला राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बनाने तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला कृष्णगढ़ (कुठाड़) में वाणिज्य संकाय की कक्षाएं आरम्भ करने की भी घोषणा की।

उन्होंने औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान पट्टा में फिटर ट्रेड आरम्भ करने की भी घोषणा की। उन्होंने ग्राम पंचायत ढकरयाणा और ग्राम पंचायत मडेसर में नए अलग पटवार वृत्त खोलने तथा गांव बेहमंडी, अलेटा, अम्बका, जसुआना, बेहक्नेता और माजरी को पटवार वृत्त कौंडी से हटाकर पटवार वृत्त कंडोल में शामिल करने और ग्राम पंचायत जगजीत नगर के शासल गांव को भावगुढ़ी पटवार वृत्त से निकालकर जगजीत नगर पटवार वृत्त में शामिल करने की भी घोषणा की।

इससे पूर्व, स्थानीय लोगों ने चंडी पहुंचने पर मुख्यमंत्री का भव्य स्वागत किया। विभिन्न संगठनों व संस्थाओं द्वारा मुख्यमंत्री को सम्मानित भी किया गया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर विख्यात चंडी मंदिर में पूजा-अर्चना कर समस्त प्रदेशवासियों की सुख-समृद्धि की कामना की।

इससे पूर्व, स्थानीय विधायक परमजीत सिंह पम्मी ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया। उन्होंने दून विधानसभा क्षेत्र में किए गए विकास कार्यों के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया और विभिन्न विकासात्मक मांगें भी रखीं।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण व आयुष मंत्री डॉ. राजीव सैजल, पूर्व विधायक के.एल. ठाकुर व विनोद चन्देल, जल प्रबंधन बोर्ड के उपाध्यक्ष दर्शन सिंह सैणी, राज्य गौ सेवा आयोग के उपाध्यक्ष अशोक शर्मा, राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा डॉ. डेजी ठाकुर, एपीएमसी सोलन के अध्यक्ष संजीव कश्यप, जिला भाजपा अध्यक्ष आशुतोष वैद्य, युवा मोर्चा जिला महामंत्री संजीव ठाकुर, बीडीसी अध्यक्षा जमुना ठाकुर व उपाध्यक्ष प्रेम ठाकुर, उपायुक्त कृतिका कुल्हरी, पुलिस अधीक्षक वीरेंद्र शर्मा, बीबीएन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. रिचा वर्मा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

के संवर्द्धन, 1.38 करोड़ रुपये से निर्मित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र बाबा हरिपुर, खेरनवाला में 1.10 करोड़ रुपये से निर्मित पुल, बगवाला बरसेन में 95 लाख रुपये से निर्मित पुल, 6.06 करोड़ रुपये लागत की गम्बर पुल-मरहेटा सड़क एवं पुल तथा 7.84 करोड़ रुपये लागत के 33 के.वी. विद्युत उप केन्द्र गोयला का लोकार्पण शामिल है।

इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री ने दून विधानसभा क्षेत्र के लिए लगभग 55.82 करोड़ रुपए की 9 विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं की आधारशिला भी रखी। इनमें 1.46 करोड़ रुपये लागत से जल शक्ति अनुभाग पट्टा में विभिन्न पेयजल योजनाओं के सुधार कार्यो, गम्बर खड्ड से 2.19 करोड़ रुपये लागत से निर्मित होने वाली पेयजल योजना बड़ोटा, जल शक्ति उपमण्डल चंडी में 6.88 करोड़ रुपये लागत की मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान राज्य सरकार ने समस्त प्रदेश का सर्वांगीण एवं एक समान विकास सुनिश्चित किया है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने चंडी में राजकीय महाविद्यालय खोलने, पट्टा महलोग में लोक निर्माण विभाग का मंडल कार्यालय खोलने, उपतहसील कृष्णगढ़ का दर्जा बढ़ाकर तहसील में स्तरोन्नत करने, जाड़ला में आयुर्वेदिक औषधालय व शेरला में पशु औषधालय खोलने की भी घोषणा की।

इसके अतिरिक्त साई में पशु औषधालय का दर्जा बढ़ाकर पशु अस्पताल करने, राजकीय माध्यमिक पाठशाला धर्मपुर तथा राजकीय माध्यमिक पाठशाला घ्याण को राजकीय उच्च पाठशाला में स्तरोन्नत करने, राजकीय उच्च पाठशाला भटोली कलां को स्तरोन्नत कर

कांगड़ा घाटी ग्रीष्मोत्सव पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में सराहनीय कदमः जय राम ठाकुर

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ने धर्मशाला में कांगड़ा घाटी ग्रीष्मोत्सव-2022 का उद्घाटन किया

मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने धर्मशाला पुलिस मैदान में कांगड़ा घाटी ग्रीष्मोत्सव-2022 का उद्घाटन किया। 2 जून से 9 जून, 2022 तक आयोजित किए जा रहे इस महोत्सव में चार सांस्कृतिक संध्याएं रखी गई हैं।

इस अवसर पर जय राम ठाकुर ने कहा कि लगभग एक दशक के उपरान्त धर्मशाला में ग्रीष्मोत्सव का आयोजन कांगड़ा घाटी में पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। महोत्सव के दौरान कलाकारों को अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का भी अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मोत्सव में एक फूड कॉर्नर भी बनाया गया है, जहां देश-विदेश से आने वाले पर्यटक हिमाचल प्रदेश के स्वादिष्ट पारंपरिक व्यंजनों का आनन्द ले सकेंगे। उन्होंने कहा कि धर्मशाला राज्य का विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है और सरकार यहां पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

ग्रीष्मोत्सव की पहली सांस्कृतिक संध्या में पुलिस बैंड हार्मनी ऑफ पाइन्स और अन्य कलाकारों ने सराहनीय प्रस्तुतियां दीं।

इस अवसर पर विधायक विशाल नेहरिया, अरूण मेहरा और अर्जुन ठाकुर, उपायुक्त डॉ. निपुण जिंदल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने ओक ओवर के निकट 2.40 करोड़ रुपये से निर्मित पार्क का उद्घाटन किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने ओक ओवर के निकट एक पार्क का उद्घाटन किया। अमृत मिशन के अन्तर्गत इस पार्क के लिए पहले चरण में 2.40 करोड़ रुपये की राशि व्यय की गई है।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह पार्क स्थानीय लोगों के साथ पर्यटकों के लिए भी मुख्य आकर्षण का केन्द्र बन कर उभरेगा। उन्होंने कहा कि दूसरे चरण में स्मार्ट सिटी मिशन के अन्तर्गत इस पार्क के विकास के लिए 2 करोड़ रुपये की राशि व्यय की जाएगी। उन्होंने कहा कि इसमें खुला (ओपन) ज़िम, बच्चों के लिए मैदान और आम जनता के लिए बेहतर रास्ते इस पार्क की विशेषता है। पर्यटकों और स्थानीय लोगों के आकर्षण के लिए यहां एक झरना स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पार्क में 1.14 लाख लीटर क्षमता का जल संग्रहण टैंक स्थापित किया गया है और इसके पानी से पार्क में रोपे गए पौधों को संचित किया जाएगा।

जय राम ठाकुर ने कहा कि यहां शिमला की सुन्दरता को प्रदर्शित करने वाले भिति चित्र और सैल्फी प्वांइट भी हैं। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिगत पार्क में 30 से अधिक प्रजातियों के पौधे और देवदार के वृक्ष हैं, जो पार्क की सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार शिमला शहर के पुराने गौरव को संरक्षित करने के लिए प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि पर्यटकों और स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए शहर की सड़कों को चौड़ा किया जा रहा है तथा अधिक पार्किंग स्थलों का निर्माण किया जा रहा है।

शहरी विकास मंत्री सुरेश भारद्वाज ने कहा कि शिमला शहर के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए प्रदेश सरकार का यह एक उल्लेखनीय कदम है। उन्होंने कहा कि पर्यटकों और स्थानीय लोगों की सुविधा के लिए शहर के विभिन्न भागों में पार्किंग स्थलों का निर्माण किया जा रहा है।

इस अवसर पर शिमला नगर निगम की महापौर सत्या कौण्डल, उप-महापौर शैलेन्द्र नेगी, उपायुक्त आदित्य नेगी, नगर निगम शिमला के आयुक्त आशीष कोहली, स्थानीय पार्षद डॉ. किमी सूद और नगर निगम शिमला के पार्षद अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने माधव सृष्टि बहुआयामी संस्थान का दौरा किया

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने सोलन जिला के गण के

सेर स्थित माधव सृष्टि बहुआयामी संस्थान का दौरा किया और इस मिशन के तहत क्रियान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति में गहन दिलचस्पी दिखाई।

मुख्यमंत्री ने कहा कि माधव योग आश्रम स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए एक प्रमुख आकर्षण साबित होगा। उन्होंने कहा कि वनस्पति विहार, भारत माता मंदिर आदि कार्य पूरा होने पर यह पर्यटकों के लिए अतिरिक्त आकर्षण का केन्द्र होंगे। उन्होंने कहा कि परिसर में स्थित सरस्वती विद्या मंदिर क्षेत्र के छात्रों को शिक्षा प्रदान कर रहा है।

जय राम ठाकुर ने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार इस संस्थान के विकास के लिए हर संभव सहायता प्रदान करेगी।

इससे पूर्व, मुख्यमंत्री ने परिसर में माधव गौशाला का भी दौरा किया और गौ पूजा की।

योग भारती हिमाचल के संस्थापक श्रीनिवास मूर्ति ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया और संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी।

इस अवसर पर माधव सृष्टि बहुआयामी संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र सूद ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

माधव सृष्टि बहुआयामी संस्थान के महासचिव रविन्द्र ठाकुर, गुरदीप सैनी और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

www.shailsamachar.com

घोषणा के बावजूद अभी तक सीबीआई में नहीं पहुंचा पुलिस भर्ती पेपर लीक मामला

- कांग्रेस ने सौंपा राज्यपाल को ज्ञापन
- 90 दिनों में मामले की जांच पूरी करने की रखी मांग
- खनन और ड्रग माफिया की ओर किया ध्यान आकर्षित
- क्या पेपर लीक एक सुनियोजित धंधा बन गया है

शिमला/शैल। पुलिस भर्ती मामले में हुए पेपर लीक प्रकरण से जो फजीहत जयराम सरकार की हुई थी उसकी भरपाई करने के लिए इस मामले की जांच सीबीआई को सौंपने की घोषणा कर दी गयी थी। लेकिन अभी तक मामले को सीबीआई को सौंपने का पत्र सरकार की ओर से नहीं भेजा गया है। कांग्रेस ने इसके लिए राज्यपाल को ज्ञापन सौंपा है। जब सरकार ने यह जांच सीबीआई को सौंपने की घोषणा की थी तब इस संद्धर्भ में एक याचिका प्रदेश उच्च न्यायालय के पास लंबित थी और यह माना जा रहा था कि गुड़िया मामले की तर्ज पर अदालत यह जांच भी सीबीआई को सौंप देगा। लेकिन मामले की सुनवाई से पहले ही इसे सीबीआई को सौंपने का ऐलान करके अदालत की प्रताड़ना और आदेश से तो राहत पा ली। लेकिन इसके व्यवहारिक इतना बीत जाने के बाद भी न कर पाना निश्चित रूप से सरकार की नीयत पर गंभीर सवाल खड़े करता है। जो आरोप और आशंकाएं व्यक्त की जा रही थी कि इसमें कुछ अति बड़े लोगों की सक्रिय भूमिका रही है। क्योंकि इतना बड़ा कांड किसी इतने ही बड़े संरक्षण के बिना नहीं घट सकता है इन आशंका को अब स्वत: ही बल मिल जाता है। जब यह मामला सामने आया तब तुरंत प्रभाव से संबंधित आई जी को बदल दिया गया और वह इससे पहले ही छुट्टी पर चला गया था। लेकिन छुट्टी से वापस आने के बाद जब उसे विदाई पर आम पार्टी दी गयी तब उस आईजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि उन्होंने पूरी ईमानदारी से काम किया है। बल्कि अपने कनिष्ठ अधिकारी का नाम लेकर कहा कि वह इस पेपर व्यवस्था को देख रहे थे और उम्मीद है कि उन्होंने भी पूरी ईमानदारी से काम किया होगा। इस मामले की जांच में अब तक 100 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। यूपी हरियाणा और बिहार तक से गिरफ्तारियां हुई है। प्रिंटिंग प्रेस के कुछ लोगों की भी गिरफ्तारी हुई है। ऐसी सभी गिरफ्तारियों को किंगपिन कहा गया है। लेकिन यह अभी तक नहीं आया है कि सारे किंगपिन गिरफ्तार कर लिये गये हैं। विपक्ष ने इस मामले में पुलिस प्रमुख पर भी सवाल उठाये हैं। उन्हें हटाये जाने तक की मांग की गयी है। लेकिन इस पर पुलिस प्रमुख की ओर से कोई ब्यान नहीं आया है और न ही मुख्यमंत्री ने बतौर गृहमंत्री इस प्रकरण पर कुछ कहा है। जबकि विपक्ष ने पेपर लीक को एक सुनियोजित धंधे की संज्ञा दी है। क्योंकि 2019 में भी इसी भर्ती का पेपर लीक हो गया था। उस समय जिन लोगों की इसमें गिरफ्तारियां हुई थी उन्हीं में से कुछ एक इस बार भी पकड़े गये हैं और गिरफ्तार किये गये हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि 2019 में इसी तरह के कांड के लिये जिन लोगों को पकड़ा गया था उन्हें कड़ी सजा दिलाने में तंत्र असफल रहा है। इसलिये इन लोगों को इस बार भी यह धंधा करते हुए कोई डर नहीं लगा। शायद इन्हें यह विश्वास रहा है कि उनके राजनीतिक संगरक्षक उन्हें बचा लेंगे। सीबीआई जांच का ऐलान करने के बाद भी आज तक मामले का वहां न पहुंचना इसी राजनीतिक संरक्षण का परिणाम माना जा रहा है।

आज प्रदेश में खनन माफिया इतना शक्तिशाली हो गया है इसका अंदाजा इसी से लग जाता है कि ऊना के स्वां का खनन शीर्ष अदालत के आदेशों के बावजूद अभी तक नहीं रुक पाया है। जिले में 500 से अधिक जेसीबी मशीनें कार्यरत हैं क्योंकि इन लोगों को राजनीतिक संरक्षण प्राप्त है। ड्रग माफिया कितना प्रभावी है इसका पता इसी से चल जाता है कि

जब यहां बनने वाली दवाइयों के आये दिन सैंपल फेल होने के समाचार आते रहते हैं और सरकार कारण बताओ नोटिस जारी करने से ज्यादा कोई कारवाई नही कर पायी है। यहीं पर प्रतिबंधित दवाओं के बनने के समाचार भी बराबर आते हैं। सरकार इन्हें जब्त करने से ज्यादा कारवाई नहीं कर पायी है। सरकार का ऐसे भ्रष्टाचार को कितना संरक्षण प्राप्त है इसका अंदाजा ड्रग कंट्रोलर के खिलाफ एक डॉक्टर एम.सी. जैन की शिकायत पर कारवाई न कर पाने से लग जाता है। इस तरह के दर्जनों मामले हैं जहां पर भ्रष्टाचार के खिलाफ कारवाई करने की बजाये उस पर आवाज उठाने वालों को ही दबाया जाता है। पुलिसभर्ती पेपर लीक मामले की जांच अब तक सीबीआई को न भेजे जाने से यह सपष्ट हो जाता है कि सरकार मामले को दबाना चाहती है। ऐसा तभी किया जाता है जब अतिबड़े लोगों कि संलिप्तता चर्चा में आ जाती हैं। विश्वविद्यालय की परिक्षाओं से लेकर विभिन्न भर्तियों के लिये पेपर लीक होने के आरोप अकसर लगते आये हैं। जिनका कभी गंभीरता से संज्ञान नही लिया गया। इसलिये आज स्थिति यहां तक पहुंच गयी है।

क्या है केंद्रीय

.....पृष्ठ 1 का शेष

है। फिर इसी आयोजन पर आये पार्टी के वरिष्ठ नेता गणेश दत्त के ट्वीट ने इसके प्रबन्धन पर गंभीर सवाल उठाये हैं। आरोप लगाया गया है कि कुछ लोगों ने इस आयोजन को हाईजैक करने का प्रयास किया है। कई निगमों/बार्डो में तैनात नेताओं को आमंत्रित ही नहीं किया गया था। एक महिला ने तो इस मामले को उपर तक ले जाने की बात की है। इन नेताओं के इस रोश से यह स्पष्ट हो जाता है कि पार्टी की एकजुटता का भीतरी सच क्या है। शायद इसी कारण से पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक अब हमीरपुर में रखी गयी है। जिसमें अनुराग ठाकुर और प्रेम कुमार धूमल को भी आमंत्रित किया गया है। पार्टी के बाद यदि यह देखा जाये कि प्रदेश को प्रधानमंत्री की इस यात्रा से क्या मिला है तो बहुत ही रोचक स्थिति सामने आती है। इस समय प्रदेश का कर्ज भार 70,000 करोड से पार हो चुका है। बेरोजगारी में प्रदेश देश के टॉप छ: राज्यों में शामिल हो गया है। इस स्थिति के बाद भी प्रधानमंत्री प्रदेश को कोई राहत पैकेज नहीं दे गये है। बल्कि इस अवसर पर मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने चार वर्षो में मिली केंद्रीय सहायता का आंकड़ा केवल 10,000 करोड बता कर सबको चौंका दिया है। 10 हजार करोड़ का आंकड़ा बाकायदा लोक संपर्क विभाग द्वारा जारी प्रेस नोट में दर्ज है। स्मरणीय है कि मोदी ने मई 2014 को सत्ता संभाली थी उसके बाद प्रदेश में 2017 में विधानसभा और 2019 में लोकसभा के चुनाव संपन्न हुये हैं। प्रधानमंत्री इस दौरान मण्डी आये थे। तब उन्होंने एक जनसभा में स्व.वीरभद्र सिंह से प्रदेश को दिये गये दो लाख करोड़ का हिसाब मांगा था। फिर गृह मंत्री अमित शाह ने अपनी चंबा यात्रा के दौरान एक लाख बीस हजार करोड़ दिये जाने का आंकड़ा परोसा था। इसी दौरान नड्डा ने एक पत्र जारी करके 69 राष्ट्रीय उच्च मार्ग प्रदेश को दिये जाने की जानकारी दी थी। यह राजमार्ग अभी तक सैद्धांतिक अनुमति से आगे नहीं बढ़े हैं। इसका सारा पत्राचार शैल पाठकों के सामने रख चुका है। अभी पिछले दिनों ही नड्डा ने प्रदेश को 72,000 करोड़ दिये जाने का खुलासा किया है। लेकिन अब जयराम ने यह आंकड़ा 10,000 करोड़ बताकर पुराने सारे दावों पर स्वयं ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। ऐसे में यह सच प्रदेश की जनता के सामने आना ही चाहिये कि डबल इंजन की सरकार का सिंगल सच क्या है। इसके लिये केंद्रीय सहायता और 70,000 करोड़ के कर्ज के खर्च पर श्वेत पत्र जारी किया जाना चाहिये।

क्या हिमाचल में आप

.....पृष्ठ 1 का शेष

उसी आंदोलन की कर्मभूमि रही दिल्ली में भाजपा लगातार तीन बार आप से हार गई। अब पंजाब की जीत के बाद भाजपा ने आप से डरना शुरू कर दिया है।

जैसे ही हिमाचल में चुनाव लड़ने की घोषणा आप ने कि तभी से कांग्रेस और भाजपा से नेताओं और कार्यकर्ताओं के आप में जाने की अटकलें तेज हो गई। दोनों से आप में लोग गये हैं। इसी बीच सत्येद्र जैन को हिमाचल का प्रभार सौंप दिया गया है। जैन ने मंडी में कैंप करके सिराज में केजरीवाल की रैली करवाने की घोषणा कर दी। लेकिन सिराज की जगह मंडी में केजरीवाल और मान का रोड शो करवा दिया। इस रोड शो के बाद भिंडरावाले के फोटो और खालिस्तानी झंडे का मुद्दा मणिकरण और ज्वालामुखी से उठ गया। हिमाचल की बसें पंजाब के रोपड़, किरतपुर में रोके जाने का मुद्दा खड़ा हो गया। इसी बीच मनीष सिसोदिया ने दिल्ली में एक पत्रकार वार्ता करके जय राम की जगह अनुराग को हिमाचल का मुख्यमंत्री बनाये जाने का नया प्रकरण छेड़ दिया। इस प्रकरण का जवाब अनुराग ने आप के प्रदेश संयोजक अनूप केसरी और दो अन्य को तोड़कर भाजपा में शामिल करवा दिया। लेकिन इसके बाद भी कांगड़ा के शाहपुर में केजरीवाल की सफल रैली हो गई।

इस रैली के बाद सिसोदिया ने शिमला आकर शिक्षा को एक ऐसा मुद्दा बनाकर उछाल दिया कि जयराम सरकार को न चाहते हुये इसका जवाब देना पड़ा। जयराम को बिजली पानी मुफ्त देने की घोषणा करनी पड़ी। जैन ने पावंटा साहब में केजरीवाल की रैली करवाने की घोषणा कर दी। आप के इन कदमों से भाजपा के लिये कांग्रेस से भी पहले निपटने की रणनीति बनानी पड़ी। विश्लेषकों के अनुसार सतेन्द्र जैन की उस मामले में गिरफ्तारी जिसमें आयकर और सीबीआई पहले ही हाथ खड़े कर चुके हैं यह राजनीतिक कारण ही है जिसकी वजह से FIR में नाम न होने के बावजूद जैन को गिरफ्तार किया गया है। भाजपा का यह कदम पूरी तरह राजनीतिक बौखलाहट का परिणाम बन गया है। जैन की गिरफ्तारी से प्रदेश के आप कार्यकर्ताओं को एक मुद्दा मिल गया है। ऐसे में यह माना जा रहा है कि यदि आप जयराम सरकार के कार्यकाल में हुए भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने की रणनीति पर आ जाती है तो भाजपा के लिए शर्मनाक हार की स्थिति बनने से कोई नहीं रोक पायेगा। ऐसे में इस पर सबकी निगाहें लगी हुई है कि क्या आप को संयोजक के रूप में कोई ऐसा व्यक्ति मिल पायेगा जो भाजपा और कांग्रेस दोनों को एक साथ चुनौती देने की क्षमता रखता हो। क्योंकि यह तय है कि प्रदेश का फैसला इस बार भी भ्रष्टाचार पर ही होगा।